महात्मा गाँधी द्वारा प्रदत्त बुनियादी शिक्षा की समसामयिक प्रासंगिकता

*डॉ. अशोक कुमार सिडाना ** रेवत सिंह *** सच्चिदानन्द तिवारी

भारतीय लोक-जीवन में नवयुग की नव-चेतना के मूर्तिमान पुष्प, युगद्रष्टा तथा युग प्रवर्तक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का प्रादुर्भाव विश्व इतिहास की सबसे बड़ी घटना है। वे हमारे जीवन में शतधा ज्योति धारा के रूप में आये और आने के साथ ही तसमावृत्त, राष्ट्र को अपनी बहुआयामी ज्ञान रश्मियों से आलोकित कर दिया। गाँधी जी न केवल युग स्रष्टा राजनीतिक थे बल्कि एक महान् शिक्षाविद् भी थे। उन्होंने अखिल भारतीय समाज में व्याप्त अशिक्षा को ही पराधीनता का मूल कारण माना और बुनियादी शिक्षा की एक नवीन योजना प्रस्तुत करके राजनैतिक और सामाजिक स्वतन्त्रता का बीजारोपण किया। भारतीय शिक्षा के इतिहास में बुनियाद शिक्षा का आविर्भाव मील का पत्थर है, जिसने राष्ट्र की दिशा और दशा परवर्तित कर दिया। बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता और संस्कृति की आधार स्तम्भ है।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा, शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में जो कुछ सर्वोत्तम है उसकी सर्वांगीण अभिव्यक्ति है। साक्षरता मात्र शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य नहीं है। महात्मा गाँधी द्वारा प्रदत्त बुनियादी शिक्षा पर विचार 1937 ई. में तथा क्रियान्वयन 1938 ई. में हुआ। इस शिक्षा का प्रमुख सिद्धान्त अग्रलिखित है-

बाल केन्द्रित शिक्षा-बुनियादी शिक्षा पद्धति में शिक्षक की अपेक्षा बालक को अधिक महत्त्व दिया गया है। बालक ही शिक्षा का मुख्य केन्द्र बिन्दु है, शिक्षक मात्र पथ-प्रदर्शक है।

बालक का सर्वांगीण विकास-भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली केवल बौद्धिक विकास पर बल देती थी, जबकि बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में बालक के मानसिक, शारीरिक और आत्मिक विकास का पूर्ण ध्यान रखा गया है।

मनोवैज्ञानिक पद्धति-बुनियादी शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है।

शिक्षा का माध्यम हस्तकला-बुनियादी शिक्षा किसी हस्तकाय के माध्यम से दी जाती है। सभी विषय हस्तकला के चारों ओर केन्द्रित रहते है।

नागरिकता के गुणों का विकास-शिक्षा द्वारा बालकों के अन्दर सहयोग, त्याग, स्नेह, स्वावलम्बन, आत्म गौरव तथा आत्मविश्वास जैसे गुणों का विकास होता है।

सांस्कृतिक विकास-बुनियादी शिक्षा में साक्षारता से अधिक महत्त्व शिक्षा के सांस्कृतिक पक्ष को प्रदान किया गया है।

आत्मनिर्भरता की भावना-बुनियादी शिक्षा में बालक हस्त-निर्मित वस्तुओं के विक्रय से अपना व पाठशाला का खर्च वहन करता है, जिससे उसमें आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न होती है।

सर्वोदय समाज की स्थापना-बुनियादी शिक्षा प्रणाली में त्याग, सहयोग, आत्मविश्वास, सेवाभाव, स्नेह, परमार्थ आदि मानवीय गुणों के विकास के द्वारा एक सहयोगी सर्वोदय समाज की परिकल्पना निहित है।

बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम-महात्मा गाँधी का विचार पाठ्यक्रम की दृष्टि से यथार्थवादी और व्यावहारिक था। उन्होंने शिक्षा को जीवन से जोड़ने का प्रयत्न किया जो अग्रलिखित है-

बेसिक क्राफ्ट-कृषि, लकड़ी का काम, बागवानी, धातु का काम, गन्ने का काम, कताई-बुनाई, मत्स्य-पालन तथा चमड़े का काम।

भाषा-मातृभाषा, **गणित**-अंक गणित बीज गणित, रेखा गणित तथा नाप-जोख।

कला-संगीत, चित्रण, पेन्टिंग, **शारीरिक शिक्षा**-व्यायाम, खेलकूद आदि क्रियाएँ।

आचरण शिक्षा-नैतिक शिक्षा, समाज सेवा, प्रार्थना एवं अन्य सामाजिक कार्य।

सामान्य विज्ञान-भौतिक विाान, रसायन विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, भौतिक संस्कृति, नक्षत्र विज्ञान आदि।

समय चक्र और विद्यालय काल-बुनियादी शिक्षा के लिए प्रतिदिन समय 5.30 घण्टे रखा गया और इसी समय में दिन भर का कार्यक्रम निम्नवत् विभाजित किया गया- मातृभाषा-40 मिनट, कला संगीत, चित्रकला आदि 40 मिनट, गणित 40 मिनट, सामाजिक अध्ययन और सामान्य विज्ञान 60 मिनट, बुनियादी शिल्प अन्य विषयों के साथ 2 घण्टा 30 मिनट प्रत्येक विद्यालय का कम से कम कार्य दिवस 288 दिन इत्यादि।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ-गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा की निम्नांकित विशेषताएँ है-

1. यह शिक्षा मनोवैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। 2. छात्र स्वावलम्बी में सहायक। 3. बुनियादी शिक्षा पद्धति का आधार भारतीय संस्कृति, दर्शन और जीवन है। 4. इस प्रणाली में बालक करके सीखता है। 5. इसमें सत्य, प्रेम, अहिंसा, सेवा, त्याग के गुणों को सिखता है। 6. यह पद्धति मातृभाषा और राष्ट्र के प्रति प्रेम तथा सम्मान का भाव उत्पन्न करता है। 7. इस शिक्षा-योजना में बच्चों की शिक्षा को किसी उपयोगी कौशल से जोड़ने की भावना है, जिससे वे अपनी आजीविका स्वयं अर्जित करने में सक्षम हो सकें।

बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता- वर्तमान भारत के निर्माता, सत्य और अहिंसा के पुजारी, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एक

* प्रोफेसर, श्री अग्रेसन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर
-* प्रवक्ता, श्री अग्रेसन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

महान् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और शैक्षिक चिन्तक थे। उनका चिन्तन सैद्धान्तिक नहीं था बल्कि यथार्थ के कठोर धरातल पर आधारित था। उन्होंने भारत की प्राचीन परम्परा, संस्कृति तथा मूल्यों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। गाँधी जी ने जिन मूल्यों व विचारों का प्रतिपादन किया वे शाश्वत है। दासता की बेड़ियों से स्वतन्त्र कराने के अतिरिक्त बुनियादी शिक्षा योजना राष्ट्र को गाँधी जी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन है। बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सम्भ्यता और संस्कृति की बुनियादी है। इसका माध्य बेसिक हस्तकला होने के कारण ही इसे बुनियादी शिक्षा कहा जाता है। गाँधी जी जानते थे कि नवीन राष्ट्र का निर्माण कालातीत शिक्षा पद्धति के आधार पर नहीं किया जा सकता।

गाँधी जी का विचार था कि बेसिक स्कूलों को अपना खर्च अपने विद्यालयों द्वारा हस्तनिर्मित वस्तुओं को बेचकर निकालना चाहिए। उन्होंने जिस समय यह बात कही थी, उस समय सम्पूर्ण राष्ट्र गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। राष्ट्र में निर्धनता और अशिक्षा का अखण्ड साम्राज्य व्याप्त था। गाँधी जी ने देखा की देश को साक्षर बनाना तब तक कठिन है जब तक कि विद्यालय आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी नहीं बनते। इसीलिए उन्होंने बुनियादी शिक्षा में स्वावलम्बन को मुख्य स्थान दिया। किन्तु स्वावलम्बन सिद्धान्त, हानिकारक है। इससे बालकों का शोषण होगा और उद्योग शिक्षा का माध्यम न रहकर साध्य हो जायेगा। बालकों द्वारा बनायी गयी वस्तुओं की गुणवत्ता अच्छी न होने से उनकी बिक्री के लिए बाजार मिलना कठिन होगा तथा प्राप्त आय बच्चों और स्कूल के खर्च के लिए पर्याप्त न होगी। अध्यापकों को आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वेतन नहीं मिल पायेगा, जिससे वे पूर्ण एकाग्रचित रहकर शिक्षण कार्य नहीं कर पायेंगे। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम जो कि एक महान् वैज्ञानिक भी है। शिक्षा का उद्यमशील के प्रबल पक्षधर है। गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा में उद्यम का जो बीज बोया था, वह आज अंकुरित, पल्लवित-पुष्पित होकर फल दे रहा है, जिससे हमारा राष्ट्र विश्व के विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में शीघ्र आ जायेगा। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा क्रिया प्रधान है। इसमें ज्ञान को अनुभवजन्य माना गया है। बालक काम करते-करते ज्ञानार्जन करते है, क्रिया द्वारा सीखना स्थायी होता है। गाँधी जी की इस विचारधारा का उपयोग विज्ञान और व्यावसायिक शिक्षा में आजकल स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। बिना प्रयोगात्मक कार्य के सिद्धान्त अधूरा होता है। जबकि बिना सैद्धान्तिक ज्ञान के प्रयोग आधार-विहीन होता है। अत: सिद्धान्त और प्रयोग की भाँति शिक्षा और क्रिया भी एक दूसरे की पूरक है। बुनियादी शिक्षा में बालक को केन्द्र बिन्दु माना गया है। यह शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है। उद्योगों में अच्छा काम करके बालक दूसरे से प्रभावित कर सकता है। अर्थात् उसे इस शिक्षा के द्वारा आत्म-प्रकाशन का अवसर मिलता है। वर्तमान समय में हमारी राष्ट्रीय शिक्षा भी बाल-केन्द्रित है। यह गाँधजी की बुनियादी शिक्षा की ही देन है।

गाँधीजी ने कहा कि, बुनियादी शिक्षा का आधार अंग्रेजी नहीं होगी, बल्कि मातृभाषा होगी। मातृभाषा को शिक्षा का आधार बनाने से बालकों में आत्म गौरव और राष्ट्रप्रेम की भावना उत्पन्न होगी, जो कि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता तथा सामाजिक समरसता उत्पन्न करने में सहायक होगी। आज अध्ययन करने पर जटिल विषय भी रोचक और बोधगम्य हो जाते है तथा बालक विषय के निहितार्थ को स्वाभाविक रूप से आत्मसात कर लेते है। जबकि अंग्रेजी के द्वारा किसी विषय को पढ़ने में विद्यार्थी की क्षमता का अधिकांश भाग अंग्रेजी समझने में ही नष्ट हो जाता है और विषय और विषय का वास्तविक बोध नहीं हो पाता है। गाँधी जी ने विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य का पालन करने और आत्मानुशासित जीवन जीने की बात कही थी। आधुनिक शिक्षा-दार्शनिक भी शिक्षा में दण्डात्मक अनुशासन विरोध और स्वानुशासन पर बल देते हैं। गाँधी जी छात्रों के चरित्र निर्माण पर बल देते थे, उनका यह विचार आज भी उतना ही उपयोगी और प्रासंगिक है। गाँधीजी ने अपनी शिक्षा योजना में अध्यापक की भूमिका का मित्र, सहायक तथा पथ-प्रदर्शक के रूप में स्वीकार की है। अध्यापक को सत्य, अहिंसा, न्याय, सहानुभूति एवं श्रम का पुजारी होना चाहिए। उनके अनुसार अध्यापकों को त्यागमूर्ति, समाज सेवी, चरित्रवान, क्षमाशील, मृदुभाषी, कर्तव्यपरायण, विनोदप्रिय, स्फूर्तिमान, श्रमी और संयमी होना चाहिए। यद्यपि गाँधी जी के ये विचार आज के भौतिक युग में अटपटे लगते है, किन्तु अध्यापक राष्ट्र निर्माण है, उसकी भूमिका विद्यार्थियों को सुयोग्य नागरिक बनाने की है। अस्तु अध्यापक के संबंध में गाँधी जी के विचार भारत को महान् राष्ट्र बनाने में आज भी समीचिन एवं उपयोगी है। शिक्षण विधियों के क्षेत्र में गाँधी जी ने करके सीखने पर अधिक बल दिया है। वे किसी हस्तकौशल, प्राकृतिक पर्यावरण अथवा किसी सामाजिक कार्य को ही शिक्षा का आधार बनाना चाहते है। सभी विषयों को इनके आधार पर वे एक-दूसरे से संबंधित करके पढ़ाने अर्थात् समवाय प्रणाली से शिक्षण करने पर अत्यधिक बल देते थे।

सारांश:

वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा में जो नवीन प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही है, उन पर गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का शिक्षा में निहित विचारों पर गम्भीर प्रभाव पड़ है। उन्होंने बुनियादी शिक्षा में हस्तकार्य को अधिक महत्त्व दिया था। कोठारी आयोग ने भी 1966 में अपनी सिफारिश में कार्याअनुभव को पाठ्यक्रम के साथ जोड़ने पर सर्वाधिक बल दिया और विद्यालयों के साथ कार्यशालाएँ जोड़ने का सुझाव प्रस्तुत किया। 1986 में नई शिक्षा नीति बनी उसमें भी व्यवसायपरक शिक्षा और रोजगार के अधिकार को संकल्प व्यक्त किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात् जिनते भी शिक्षा आयोग बने सभी ने अपने सुझावों में बाल केन्द्रित शिक्षा और विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा में इसे पहले ही सम्मिलित किया था। स्पष्ट है कि आज वैश्वीकरण के इस युाग में गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता पहले से कम नहीं हुई है, इसमें न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व को नया आलोक और नयी दिशा प्रदान करने की शक्ति विद्यमान है। इसे स्वीकार करके ही हम अपने राष्ट्र को समृद्ध, उन्नत, विकसित और विश्व गुरु बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. कृपालीन कृष्ण : गाँधी: एक जीवन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2005, 2. गाँधी, एम. के. : नई तालीम, नव जीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 1956, 3. नेमा, पी.जी.: गाँधी जी का दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर, 2005 4.पाण्डेय, डी.डी.: गाँधी दर्शन के मूल बिन्दु, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006 5. गुप्ता, एल.एन., एवं मदन मोहन: महान्पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002,6. रोमां. रोलां: महात्मा गाँधी: जीवन और दर्शन, लोक भारतीय प्रकाशन इलाहाबाद, 2002